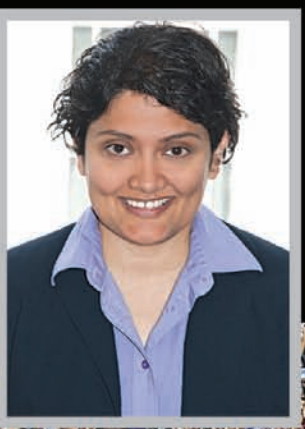

आज भी ऐसी परंपराएं हैं, जो मानव जीवन का मार्गदर्शन करने के बजाय राह में मुश्किलें खड़ी कर देती हैं. प्रेरणा ने ऐसी दकियानूसी परंपराओं को दरकिनार कर समाज में एक नई मिसाल कायम की है...

परंपराओं से जूझती प्रेरणा देती प्रेरणा लाल

खूबसूरत और अल्हड़, मुझ से कई साल छोटी मेरी ममेरी बहन माधवी. उन दिनों उस की शादी की बातचीत होनी शुरू हो गई थी.

"इतनी जल्दी? अभी तो वह स्कूल में ही होगी," फोन पर मम्मी से बातचीत के दौरान मैं ने पूछा, तो पता चला कि वह कालेज के फाइनल ईयर में थी.

"इस की शादी हो तो फिर अलकनंदा का नंबर आए. वह भी तो तैयार बैठी है," मम्मी बोलीं.

अलकनंदा माधवी की छोटी बहन है. फिर मां ने खुश हो कर बताया कि लड़के वालों की तरफ से एक रिश्ता आया है, जो माधवी की अपने बेटे से शादी कराने के लिए मेरे पीछे पड़े हैं. लड़का भी अच्छा है. अर्थशास्त्र में एम.ए. है. मांबाप दोनों डाक्टर हैं और क्या चाहिए.

माधवी की शादी उसी घर में हो गई. मैं ने मम्मी से उस के बारे पूछा तो उन्होंने वही राग अलापा कि लड़का अर्थशास्त्र में एम.ए. है, मांबाप दोनों डाक्टर हैं और लड़की को मांग कर शादी की है. फिर हंस दीं और बोलीं कि इस से बढ़िया बात क्या हो सकती है.

माधवी की शादी टूटने में ज्यादा समय नहीं लगा. दरअसल, लड़का एक नंबर का झूठा निकला. उस ने झूठ के इतने पुल बांध दिए कि माधवी को पता भी नहीं चल पाया कि कब से उस का दूल्हा बेरोजगार था और मौजमस्ती की जिंदगी जीतेजीते ये दोनों कितने कर्ज में डूब गए हैं. जब तंग आ कर वह अपने पति को छोड़ कर अपने मम्मीपापा के घर वापस आई, उस को एक प्यारी सी बेटी भी हो गई थी. उस ने आगे की पढ़ाई करनी शुरू की और जीवन को नई दिशा देने की ठान ली. इस बात को 7-8 साल हो चुके हैं.

परंपराओं के गुलाम

अभी हाल ही में पता चला कि माधवी ने शादी कर ली. इस बार लड़का उस ने खुद चुना था. आगे पता चला कि शादी में उस के दोस्तों के अलावा घर का कोई भी सदस्य शामिल नहीं हुआ. मां ने बताया कि मामाजी को लड़का पसंद नहीं था और बाकी रिश्तेदारों को पूरा सिलसिला ही अटपटा लगा. 45 साल के मामाजी ने बेकार दामाद ढूंढ़ा तब कोई कुछ नहीं बोला, अब एक 32 साल की औरत ने अपने ही लिए पति ढूंढ़ा है, तो इन्हें अटपटा लग रहा है.

असल में हम सब परंपराओं के गुलाम हैं. ऐसी परंपराओं के जिन के बिना जीवन पानी में छूटी एक पतवारहीन नाव के समान लगता है. हमारे समाज में जब कोई दुर्घटना घटती है, तो

हम कभी अपने सामाजिक तरीकों का विश्लेषण नहीं करते हैं, बस यह कह कर टाल देते हैं कि जिस के साथ हादसा हुआ है उस में जरूर कोई खोट होगी या फिर बेचारे के भाग्य को कोसते हैं. फिर पूजाहवन करा कर बात संभालने की कोशिश करते हैं.

अधिकारहीन जीवनों को आवाज

समाजशास्त्रियों के अनुसार ऐसे समाज में अधिकांश जन रूढिवादी होते हैं. रूढिवाद कोई दर्शनशास्त्र नहीं है, महज मानव प्रवृत्ति है. समाज के रूढिवादी जन पारंपरिक संस्थानों और रीतिरिवाजों को हर हाल में संरक्षित रखने की कोशिश में लगे रहते हैं, क्योंकि उन का यह मानना होता है कि इसी में समाज की स्थिरता कायम रह सकती है.

माधवी को अपने जीवन की चुनौतियों का सामना करने की जो हिम्मत और समझ बहुत कुछ हो जाने के बाद ही मिल पाई, वह हिम्मत और समझ प्रेरणा लाल में अपने 22वें साल में

आ गई, क्योंकि अमेरिका के उत्तरी कैलिफोर्निया की निवासी प्रेरणा के पास और कोई चारा नहीं था और यदि कुछ रास्ते थे तो वे उन्हें मंजूर नहीं थे. 22 साल की उम्र में कालेज और विश्वविद्यालय की उच्च डिगरी पाने के बाद जब इन्होंने अपने जीवन की बागडोर अपने हाथों में लेने का कदम उठाया और तब से जिस अनिश्चित सफर में निकलीं, आज ऐसे मुकाम पर पहुंच गई हैं जहां से अमेरिका में हजारों अधिकारहीन जीवनों को आवाज देने का सामर्थ्य रखती हैं.

सराहनीय कदम

2007 में कुछ अन्य संस्थापकों के साथ प्रेरणा ने ड्रीम ऐक्टिविस्ट की संस्थापना की. ड्रीम ऐक्टिविस्ट एक सक्रियतावादी व आप्रवासी नौजवानों का औनलाइन समुदाय है, जो अपने बलबूते पर देश भर में हजारों लोगों को कार्यान्वित होने के लिए संगठित करता है, विभिन्न स्तरों पर कार्य योजनाएं तैयार करता है और अमेरिकी कांग्रेसमैन और सिनेटरों को अपने मुद्दों से अवगत करा कर 2 बार 'ड्रीम ऐक्ट बिल' अमेरिकी कांग्रेस और सिनेट में वोट के लिए लाने में कामयाब हो चुका है. आज इस समुदाय के 1 लाख सदस्यों को राजनीतिज्ञ एवं आप्रवासी अधिकार संगठन गंभीरता से लेते हैं.

अमेरिका में हर साल हजारों ऐसे बच्चे आते हैं, जिन के मांबाप को जब तक कानूनी तौर पर रहने का दर्जा मिलता है ये बच्चे पढ़लिख कर बालिग बन जाते हैं, लेकिन अमेरिकी पालनपोषण, शिक्षा और जीवनशैली के बावजूद कानूनन अमेरिकी नहीं बन पाते हैं. इसलिए वे बस इसी भय से ग्रसित रहते हैं कि कभी भी इन का देशनिकाला कर इन्हें ऐसी जगह भेज दिया जाएगा जहां से इन का कोई वास्ता ही नहीं. अमेरिका में ये बिना कानूनी कागजात के कोई काम नहीं कर सकते. यहां तक की गाड़ी भी नहीं चला सकते. पढ़ेलिखे होने के बावजूद जिस समाज में जीते हैं उसी में छिपेछिपे रहते हैं.

ड्रीम ऐक्ट बिल ऐसे होनहार बच्चों को स्थायी आवास प्रदान करने के लिए लिखा गया था. इस बिल के पास होने से कम से कम 65,000 नौजवानों को लाभ होगा. प्रेरणा लाल और ड्रीम ऐक्टिविस्ट के अन्य 'ड्रीमर्ज' के पास जबजब किसी देश से निकाले जाने वाले नौजवान की दरख्वास्त आती है, वे उन को अधिकार दिलाने के लिए जीजान से जुट जाते हैं यहां तक कि धरने व प्रदर्शन का भी सहारा लेते हैं. इस प्रकार 2009 से अब तक ये लोग सैकड़ों देशनिकाले रुकवा चुके हैं.

हिम्मत न हारी

गूगल में नाम खोजो तो 16,000 से भी ज्यादा 'हिट्स' पाने वाली 27 वर्षीय प्रेरणा लाल की योजना प्रतिष्ठित जौर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी से जल्द ही (मई, 2013 में) जेडी की उच्च डिगरी हासिल करने के उपरांत आप्रवासन कानून की प्रैक्टिस शुरू कर के अपने सक्रियतावाद को अगले दौर में लाने की है.

इतने यत्न, इन सब के लिए इन्होंने हिम्मत कैसे जुटाई, इस की कहानी ज्यादा लंबी नहीं है. फिजी में भारतीय परिवार में जन्मीं प्रेरणा जब 14 वर्ष की थीं, उन के मांबाप ने अचानक देश छोड़ने का फैसला ले लिया. उत्तरी कैलिफोर्निया में प्रेरणा की नानी अमेरिकी नागरिक थीं, इसलिए वे वहीं गए. वहां प्रेरणा के मांबाप की अपने स्थायी आवास के लिए लंबी कागजी कार्यवाही की शुरुआत हुई. उधर प्रेरणा को नए देश में, नए स्कूल में, नए सिरे से दाखिला मिला. पढ़ाई में सदैव अव्वल रहने वाली प्रेरणा को बाद में कई प्रतिष्ठित कालेजों में दाखिला मिला, लेकिन कानूनी कागजात न होने की वजह से प्रेरणा के लिए उन कालेजों में पढ़ाई करना व ऐजुकेशन लोन लेना आसान नहीं था. फिर भी अल्प शुल्क वाले कम्यूनिटी कालेजों में दाखिला ले कर इन्होंने उच्च शिक्षा हासिल की और जब तक अंतर्राष्ट्रीय संबंध में एम.ए. की डिगरी प्राप्त की, इन के मातापिता को अमेरिका में रहने का ग्रीन कार्ड मिल गया. इस कार्यवाही में पूरे 8 साल लगे.

जीवन का महत्त्वपूर्ण क्षण

प्रेरणा क्योंकि अब बालिग हो चुकी थीं, इन के मातापिता इन्हें इतने साल के इंतजार के बाद भी स्पौंसर नहीं कर पाए. लाइन में खड़े होने की, मतलब फिर 8 साल अधिकारहीन और अदृश्य जीवन गुजारने की स्थिति इन की अभी भी बरकरार थी.

वकील ने इन्हें ड्रीम ऐक्ट बिल पास होने की क्षणिक उम्मीद दिलाई. क्षणिक इसलिए क्योंकि 2007 में यह बिल पास नहीं हो पाया. वकील का एक और सुझाव जोकि किसी अमेरिकी नागरिक से प्रेरणा की शादी कराने का था, इन की मां के दिल में घर कर गया और वे तुरंत प्रेरणा के लिए लड़का ढूंढ़ने में लग गईं. अपने जीवन के इस महत्त्वपूर्ण मोड़ पर पहुंचने पर प्रेरणा ने वह निर्णय लिया जो इन की स्थिति में भयवश लोग अकसर लेने में चूक जाते हैं.

गत वर्षों में इन्होंने निश्चित रूप से अपनी लैंगिकता समझ ली थी. प्रेरणा समलैंगिक थीं और शायद इन के परिवार वालों को भी इस का आभास था. फिर भी यह सोच कर कि एक पत्थर उछाल कर शायद 2 हल निकल पाएं, वे शादी के लिए लड़का खोजने में जुटे रहे. किंतु प्रेरणा किसी हाल में अपने जीवन संबंधी किसी बात में समझौता करने को तैयार नहीं थीं. इन्होंने फैसला कर लिया खुलेआम अपनी लैंगिकता का ऐलान करने का. इस के लिए पहले शादी में रुचि रखने वाले उम्मीदवारों को खुद से दूर भगाया, फिर अपना आवासी दर्जा कानूनी बनाने का जिम्मा अपने हाथों में ले लिया. अब ये अपनी मदद करतेकरते औरों की मदद करने में भी ऐसी माहिर हो गई हैं कि पब्लिक फिगर बन गई हैं. अंतत: शुरुआत से ही निराशा के बावजूद, इन की मां ने निरंतर इन का साथ दिया और पिता, जिन से काफी समय तक संबंध मधुर नहीं थे, अब सामान्य हो चुके हैं.

-मुक्ता सिंह जौकी ●